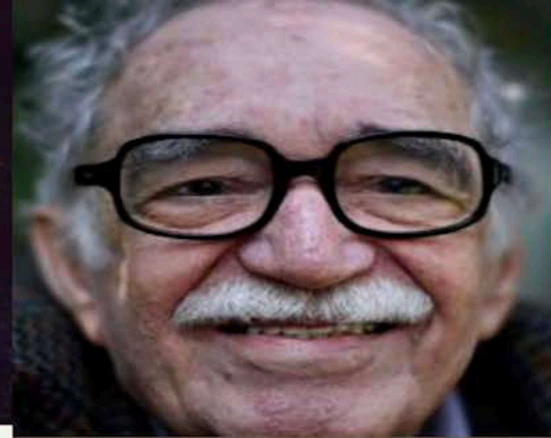
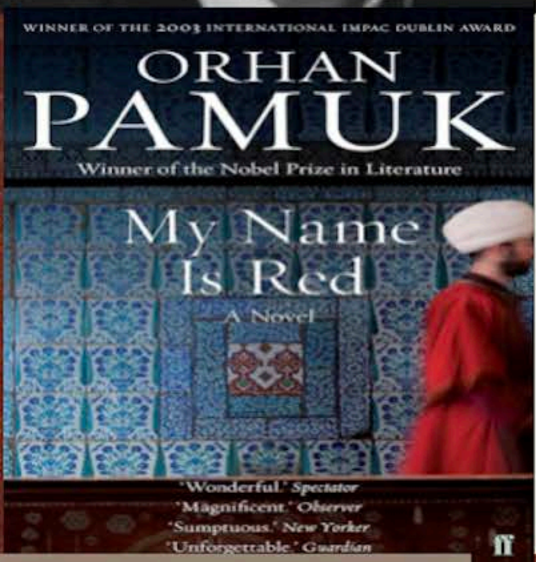

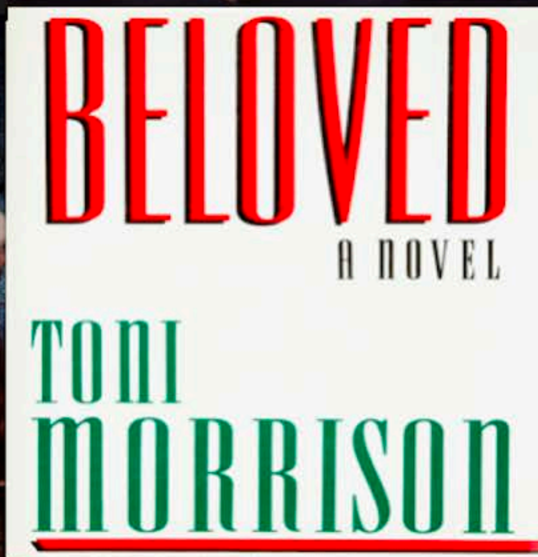

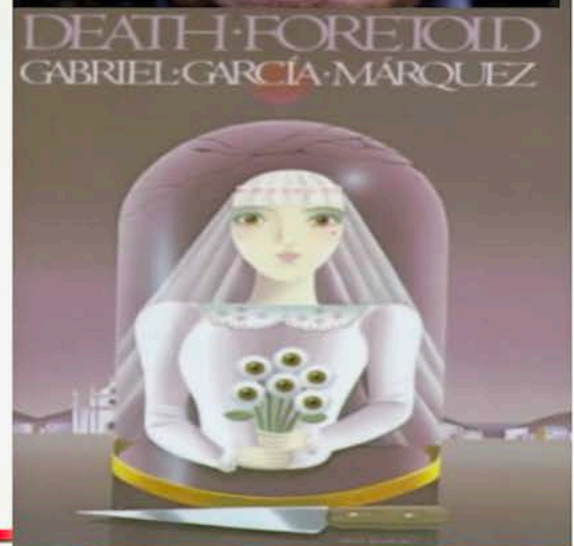

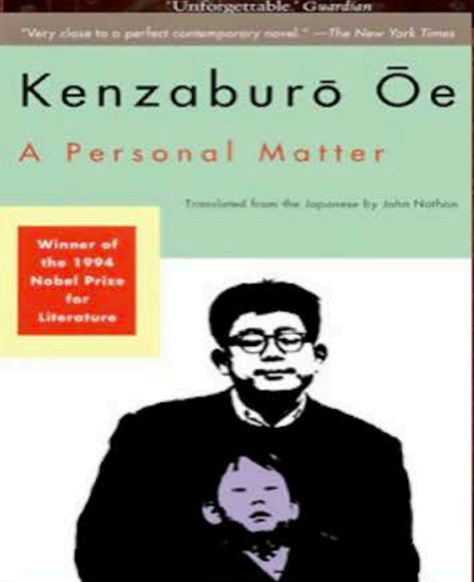

मृत्यु

विश्व साहित्य की एक यात्रा

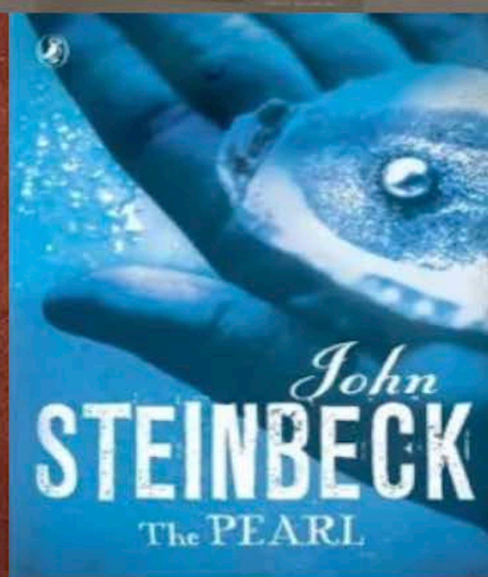

विजय शर्मा

मृत्यु

विश्व साहित्य की एक यात्रा

विजय शर्मा

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अगस्त, 2025

© विजय शर्मा

मनहूस कोविड काल में कोरोना से गुजरे तमाम लोगों को समर्पित

अपनी बात

जो जन्मता है, वह मरता है, यह शाश्वत सत्य है। भारतीय विचार में मृत्यु कुछ नहीं, मात्र शरीर परिवर्तन है, जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर नए वस्त्र धारण करता है, ठीक वैसे ही शरीर पुराना होने पर आत्मा नए शरीर में प्रवेश करती है। भारत में या यूँ कहें पूर्व में जीवन और मृत्यु तथा मृत्योपरांत जीवन पर बहुत चिंतन हुआ है। हमारे यहाँ मृत्यु को लेकर एक पूरा उपनिषद रचा गया है। कठोपनिषद में इसी विषय की गहन पड़ताल है। यह उपनिषद सरल भाषा में कहानी के माध्यम से बहुत गहरी बात का विवेचन करता है। नचिकेता मृत्यु से आत्मज्ञान पाने की बात करता है। वह मृत्यु का राज जानना चाहता है। मृत्युदेव नचिकेता की पात्रता परख कर उसे जीवन-मृत्यु की कई महत्वपूर्ण बात बताते हैं। मृत्यु से अधिक मूल्यवान है, जीवन को अर्थपूर्ण ढंग से जीना। सार्थक, श्रेयस जीवन मनुष्य का धर्म होना चाहिए। उसे स्वधर्म (अपनी प्रवृति और अभिवृति) के अनुसार कार्य करना चाहिए।

मरणधर्मा मनुष्य अनाज की तरह पकता है और अनाज की तरह फ़िर उत्पन्न होता है। गर्मी के बाद वर्षा आती है, फ़िर सर्दी आती है और सर्दियों के बाद फ़िर गर्मियाँ आती हैं। ऐसा ही जन्म और मृत्यु का भी चक्र है। पूर्व में वर्तुलाकार जीवन का विचार मान्य है, यानि जन्म-मृत्यु, मृत्यु-जन्म। जबकि पश्चिम में मात्र एक जन्म पर विश्वास किया जाता है। वहाँ पुनर्जन्म की अवधारणा नहीं है। आज पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव से और अपनी जड़ों से दूर होते जाने के कारण पूर्व में भी लोग एकरेखीय जीवन, एक बार जन्म और एक बार मृत्यु की

बात करने लगे हैं। लेकिन गहराई में अभी भी यहाँ जन्म-जन्मांतर में आस्था है। न जाने कितना विचार-विमर्श इस विषय पर हुआ है, कई किताबें इस विषय पर मिलती हैं। विज्ञान ने पहले-पहल मृत्योपरांत जन्म को नकार दिया था, लोग इस विचार की खिल्ली उड़ाने लगे थे। विज्ञान अभी शैशवावस्था में है। इसके बावजूद इस विषय पर शोध हो रहे हैं। पराविज्ञान, परामनोविज्ञान जीवन-मृत्यु की गुत्थी सुलझाने का प्रयास कर रहा है। पर विज्ञान, मनोविज्ञान के बहुत पहले से इस पर खोज हो रही है। तिब्बत और भारत में इस विषय पर काफ़ी काम हुआ है। 'मेनी मास्टर्स मेनी लाइफ़', 'लाइफ़ आफ़्टर डेथ', 'लाइफ़ आफ़्टर लाइफ़', 'आफ़्टर द लाइट' जैसी किताबों में इसी विषय का वर्णन है।

पूर्व की विचारधारा के अनुसार आदमी मरता है, फ़िर जन्मता है, कोई जन्म, कोई मृत्यु अंतिम नहीं होती है। बार-बार जन्म होता है, बार-बार मृत्यु होती है। शरीर नया होता है, मगर चेतना वही रहती है, चेतना नहीं मरती है। अत: चेतना की उम्र हजारों-लाखों-करोड़ों साल की हो सकती है। चेतना ही सब अनुभव करती है, चेतना अनुभव सम्पन्न होती है। इसीलिए हिन्दी में 'पेट में दाढ़ी होना' जैसे मुहावरे बने हैं, अर्थात बाल-वृद्ध, बच्चा जो बूढ़े के समान ज्ञानी है। इसीलिए कुछ लोग बहुत कम उम्र में बहुत बड़े काम कर जाते हैं। आज मनोविज्ञान भी शारीरिक उम्र और मानसिक उम्र की बात करता है। शारीरिक उम्र व्यक्ति की वास्तविक उम्र नहीं होती है, भले ही फ़ार्म भरते समय केवल वही उम्र लिखी जाती है। एक उम्र के लोगों की अक्ल एक जैसी नहीं होती है। उम्र होने से कोई अक्लमंद नहीं हो जाता है और कई बार छोटे बच्चे बहुत बड़ी अक्ल का प्रदर्शन करते हैं। जैसे कठोपनिषद में

नचिकेता अपनी बुद्धि, दृढ़ निश्चय और निडरता का परिचय देता है और सारे प्रलोभनों को अस्वीकार कर मृत्यु का रहस्य जानना चाहता है। और चेतना की उम्र का क्या पूछना।

**

करीब ढ़ाई दशकों से नोबेल पुरस्कृत साहित्य पर लिखना-पढ़ना चल रहा है। और इस विषय पर अब तक मेरी पाँच पुस्तकें ('अपनी धरती, अपना आकाश: नोबेल के मंच से', 'स्त्री, साहित्य और नोबेल पुरस्कार', 'क्षितिज के उस पार से', 'नोबेल पुरस्कार: एशियाई संदर्भ' तथा 'वर्जित संबंध: नोबेल साहित्य में') प्रकाशित हो चुकी हैं। इसी की अगली कड़ी यह पुस्तक 'मृत्यु: विश्व साहित्य की एक यात्रा' प्रस्तुत है। इस आलोचनात्मक पुस्तक में पाँच नोबेल पुरस्कृत उपन्यासकारों के उपन्यासों – जॉन स्टीनबेक का 'द पर्ल', गैबियल गार्षा मार्केस का 'क्रोनोकल ऑफ़ ए डेथ फ़ॉरटोल्ड', टोनी मॉरीसन का 'बिलवड', केनज़ाबुरो ओए का 'ए पर्सनल मैटर' तथा ओरहान पामुक के 'माई नेम इज रेड' – की विवेचना की गई है।

ये पाँचों उपन्यास मृत्यु के इर्द-गिर्द घूमते हैं। हत्या इनकी केंद्रीय थीम है। कभी सुनियोजित हत्या हुई है, कभी संयोग से हत्या हो जाती है। कभी मौके की नजाकत को देखते हुए तक्क्षण निर्णय हत्या में फ़लित होता है और कभी हत्या का पूरा सरअंजाम किया जाता है। तीन उपन्यासों में बच्चे की बात प्रमुखता से आई है। 'द पर्ल' में यह हुआ है, 'बिलवड' का कथानक इसी के आस-पास बुना गया है। 'ए पर्सनल मैटर' ('अघवी, द

स्काई मॉन्सटर') में यह होता है। तीनों में बच्चे हैं, दो उपन्यास में बच्चे मर गए हैं। एक उपन्यास में बच्चा अपंग है और पिता प्राणपण से चाहता है कि बच्चा जीवित न रहे। एक में बच्चा मार डाला गया है, एक कथा में बच्चा विष दंश से बच जाता है, मगर बाद में गोली का शिकार होता है। और 'ए पर्सनल मैटर' में बच्चा जब पैदा हुआ तो पिता चाहता था कि बच्चा मर जाए और अपनी इस सोच के कारण अपराध बोध से सदा ग्रसित रहता है। अपंग बच्चा भी उसी से जुड़ी एक कहानी में मार डाला जाता है। पामुक का 'माई नेम इज रेड' उपन्यास भी हत्या को लेकर चलता है, इसमें एक से अधिक हत्या होती है। मगर यहाँ हत्या बच्चों की नहीं हो रही है, मरने वाले और मारने वाले सब वयस्क हैं, तथा सब पुरुष हैं। मार्केस के यहाँ एक हत्या होती है लेकिन हत्यारे दो हैं, या यूँ कहें सारा कस्बा, सारा समाज हत्यारा है। और यहाँ मृत्यु का चित्रण बहुत भिन्न है। यहाँ हत्या न तो आकस्मिक है, न किसी प्राकृतिक आपदा से है और न ही स्वभाविक मृत्यु है। यहाँ एक घोषित हत्या होती है और इस हत्या का स्मरण विभिन्न लोगों के द्वारा किया गया है। 'क्रोनिकल ऑफ़ ए डेथ फ़ोरटोल्ड', 'बिलवड' और 'ए पर्सनल मैटर' वास्तविक घटनाओं पर आधारित उपन्यास हैं। जबकि 'द पर्ल' एवं 'माई नेम इज रेड' काल्पनिक हैं। चारों उपन्यास में हत्या के कारण बहुत भिन्न-भिन्न हैं। 'माई नेम इज रेड' ऐतिहासिक है, पर कल्पना का भरपूर पुट इसमें है। जबकि 'द पर्ल' लोककथा पर आधारित काल्पनिक उपन्यास है। पाँचों उपन्यास में हत्या के कारण बहुत भिन्न-भिन्न हैं।

पाँचों उपन्यास में जो एक बात साझी है, वह है, इनके रचनाकार का नोबेल पुरस्कृत साहित्यकार होना। इन चारों की ख्याति उपन्यासकार के रूप में ही है। हालाँकि इन्होंने अन्य विधाओं में भी हाथ आजमाया है और सफ़ल रहे हैं। जॉन स्टीनबेक, गैब्रियल गार्षा मार्केस, टोनी मॉरीसन, केनज़ाबुरो ओए तथा ओरहान पामुक ने गद्य में ख्याति पाई है। टोनी मॉरीसन अमेरिकी, वे अफ़्रो-अमेरिकी है, स्टीनबेक भी अमेरिकी हैं, मगर श्वेत अमेरिकी हैं, इन दोनों में एक और अंतर है, टोनी मॉरीसन स्त्री हैं, स्टीनबेक पुरुष हैं। साहित्यकार मार्केस लैटिन अमेरिका से हैं, केनज़ाबुरो ओए जापान से ताल्लुक रखते है, ओरहान पामुक तुर्की से आते हैं, खुद को तुर्की में अभिव्यक्त करते हैं।

पाँचों उपन्यासकारों में एक और बात साझी है। ये पाँचों अपने रचनाकर्म में शिक्षा पर बल देते हैं। इन्हें शिक्षा का महत्व ज्ञात है। उचित शिक्षा के अभाव में व्यक्ति गुलामी की जंजीरों में जकड़ा रहता है, शोषण का शिकार होता है। स्टीनबेक और मॉरीसन ने गरीब और दास तथा औपनिवेशिक जगत में शिक्षा के महत्व को रेखांकित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। ओए एक भिन्न प्रकार की अपंग व्यक्ति की शिक्षा की सिफ़ारिश करते हैं, मार्केस समूचे समुदाय को शिक्षित करने की बात करते हैं, और पामुक कला की शिक्षा की लाभ-हानि को दिखा रहे हैं।

जॉन स्टीनबेक को 1962 में नोबेल पुरस्कार मिला, गैब्रियल गार्षा मार्केस को 1982 में, टोनी मॉरीसन को 1993 में यह सम्मान मिला। केनज़ाबुरो ओए को यह 1994 में मिला और ओरहान पामुक को 2006 में इससे नवाजा गया। इस पुस्तक में उपन्यासों को उनके

रचनाकारों के पुरस्कृत होने के क्रम को रखा गया है। 'द पर्ल' (मात्र 54 पन्ने), 'क्रोनिकल ऑफ़ ए डेथ फ़ॉरटोल्ड', 'ए पर्सनल मैटर' (163 पन्ने) बाकी दोनों उपन्यासों से लंबाई में अपेक्षाकृत छोटे उपन्यास हैं। 'द पर्ल' को उपन्यासिका कहा जा सकता है, 'क्रोनिकल ऑफ़ ए डेथ फ़ॉरटोल्ड' भी मात्र 111 पन्नों में सिमटी कहानी है। जबकि 'बिलवड' (298 पन्ने) तथा 'माई नेम इज रेड' (549 पन्ने) दोनों बड़े कलेवर के उपन्यास हैं।

'ए पर्सनल मैटर' मध्यवर्ग के नायक बर्ड में आत्म-धिक्कार का भाव प्रबल है, जबकि 'द पर्ल' के लोग गरीब हैं, लेकिन उनमें आत्म-सम्मान का भाव प्रबल है, उनमें गर्वीली गरीबी है। 'बिलवड' के पात्र भी आत्म-गौरव से भरे हुए हैं। 'माई नेम इज रेड' के चरित्रों में आत्म-गर्व है, मगर वह 'बिलवड' के पात्रों से भिन्न है। 'माई नेम इज रेड' के पात्र अपनी कुशलता से गर्वित हैं, वे चित्रकार के रूप में अद्वितीय हैं। 'क्रोनिकल ऑफ़ ए डेथ फ़ॉरटोल्ड' के विभिन्न पात्र खूब आत्मविश्वास रखते हैं। 'द पर्ल' और 'बिलवड' के पात्र मनुष्य के रूप में अप्रतिम हैं। चारों उपन्यास के कथानक भिन्न -भिन्न हैं। इनकी कथन शैली भी भिन्न है। स्टीनबेक का अनाम कथावाचक एक प्राचीन कथा सुना रहा है, उसे सब ज्ञात है, पात्रों के आंतरिक भाव-विचार भी। चूँकि उपन्यासकार एक ऐसे समाज की कहानी सुना रहा है जो वाचिक परम्परा का वाहक है अत: उन्होंने उसके अनुरूप शैली अपनाई है।

अनाम तो 'क्रोनिकल ऑफ़ ए डेथ फ़ोरटोल्ड' का कथावाचक भी है मगर यह एक वास्तविक घटना पर आधारित है और लेखक के निजी जीवन से जुड़ा है और उसने इसे छिपाया नहीं है। यह पत्रकारिता की शैली में है। अत: साक्षात्कार के दौरान बहुत सारे पात्र

अपने विचार स्वयं रखते हैं। 'बिलवड' का कथावाचक भी अनाम और सर्वज्ञ है। लेकिन यहाँ कई बार पात्र स्वयं बोलने लगते हैं साथ ही स्वगत कथन, एकालाप एवं समूह आलाप भी यहाँ है। केनज़ाबुरो ओए अपने नायक बर्ड से ही अपने उपन्यास 'ए पर्सनल मैटर' की कथा कहलवाते हैं। लेकिन तुर्की के उपन्यासकार ओरहान पामुक अपने उपन्यास 'माई नेम इज रेड' के लिए बहुवाचक शैली का प्रयोग करते हैं। उनके यहाँ नायक के अलावा स्वयं मृत्यु, और-तो-और जानवर भी कथा को अपने ढंग से आगे बढ़ाते हैं।

इन पाँचों उपन्यास के देश-काल भी भिन्न हैं। हालाँकि स्टीनबेक ने अपने पर्ल को उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक या बीसवीं सदी के प्रारंभिक दशक में स्थापित किया है, मगर यह किसी भी काल में घटित हो सकता है। स्थान के लिए उन्होंने अमेरिका में बाजा कैलीफ़ोर्निया के ला पाज़ नामक स्थान को चुना है। यह स्थान प्रशांत महासागर का मैक्सिको प्रायद्वीप है और पहाड़ियों से घिरा हुआ है। पहाड़ी भी इस उपन्यास में प्रमुख भूमिका निभाती है। पहाड़ियों के कारण यह स्थान दूसरों से कटा हुआ है। ला पाज़ बहुत ही गरीब लोगों का रहनवास है। इनकी आमदनी का एकमात्र स्रोत गोताखोरी, समुद्र से मोती निकालना है। यह स्थान स्पष्ट रूप से दो भाग में बँटा हुआ है एक हिस्से में दारुण गरीबी में ये मछुआरे रहते हैं। शहर का दूसरा भाग अमीरों का है जहाँ रंग भेद के दर्शन होते हैं। उपन्यास उपनिवेशवाद की बुराइयाँ रेखांकित करता है। प्रभुओं के लिए दूसरे 'जानवर' होते हैं जिनका वे बिना हिचक शोषण करते हैं। शासक वर्ग स्वयं को चालाक समझता है और अपने स्वार्थ के लिए छल-कपट का सहारा लेता है। ये अपनी शिक्षा का बेजा लाभ उठाते हैं और

मासूमियत का भरपूर दोहन करते हैं। डॉक्टर और पादरी इस वर्ग के प्रतीक हैं। दोनों हिस्सों के बासिंदों के स्वभाव में जमीन-आसमान का अंतर है। एक जीवन कठिनाइयों से भरा और परिश्रम से पूर्ण है, दूसरा आरामतलब जिंदगी जीता है। स्टीनबेक ने पूरी स्थान योजना ऐसी की है कि पाठक किसी स्वप्न लोक में विचरण करता है। पूरी उपन्यासिका 'द पर्ल' यथार्थपरक होते हुए भी स्वप्न का आभास देती है। उन्होंने लोककथा को लोककथा के अंदाज में प्रस्तुत किया है।

मार्केस अपने उपन्यास का काल वास्तविक घटना काल 1951 ही रखते हैं, स्थान भी वही कोलम्बिया का सूक्रे कस्बा है। हालाँकि उन्होंने कस्बे का नाम नहीं दिया है। लेकिन इसे आसानी से पहचाना जा सकता है। कस्बा स्वयं एक पात्र की भूमिका अदा करता है। उनकी कई रचनाओं की घटनास्थली यही कस्बा है और उनके कई पात्र इसी स्थान से आते हैं। यह कैथोलिक समाज पुरुषवादी सत्ता से संचालित है जहाँ स्त्री-पुरुष के लिए भिन्न तथा तयशुदा नियम और मूल्य हैं। पूरा कथानक तीस साल पुरानी घटना को चित्रात्मक या यूँ कहें सिनेमाई शैली में दिखाता है और मात्र कुछ घंटों का लेखा-जोखा है। उन दिनों इस इलाके में राजनैतिक गर्मागर्मी थी और हत्याएँ हो रही थीं। मार्केस तभी-के-तभी इस हत्या पर कहानी लिखना चाहते थे, मगर उनकी माँ ने उन्हें ऐसा करने से रोका। हत्या की भीतरी जानकारी उन्हें थी, और हत्या से जुड़े लोग उनके नजदीकी थे। माँ ने मना किया क्योंकि मुख्य पात्र जिंदा थे। मगर एक समय आया जब उन्होंने इसे लिखा और उपन्यासिका का नाम उन्होंने 'क्रोनिकल ऑफ़ ए डेथ फ़ोरटोल्ड' दिया। ऊपर से देखने पर यह एक हत्या का मात्र लेखा-